

لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتْلَوْا أَمْوَالَكُمْ وَلَا أَوْلَادِكُمْ

को ख़बर नहीं²⁰ ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के

عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ۙ ۝ وَأَنْفِقُوا

ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करो²¹ और जो ऐसा करे²² तो वोही लोग नुक़सान में हैं²³ और हमारे दिये में

مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْ

से कुछ हमारी राह में खर्च करो²⁴ क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब

لَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۖ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

तू ने मुझे थोड़ी मुदत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सद्का देता और नेकों में होता

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

और हरगिज़ **अल्लाह** किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए²⁵ और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है

﴿سورة التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٨﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ٢﴾ ﴿آيَاتُهَا ١٨﴾

सूरए तगाबुन मदनिय्या है, इस में अठारह आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُدُودُ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की तारीफ़²

وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ

और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोही है जिस ने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में

और मोमिनीन को ज़िल्लत वाला। **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : 20 : इस आयत के नाज़िल होने के चन्द ही रोज़ बा'द इब्ने उबय मुनाफ़िक

अपने निफ़ाक़ की हालत पर मर गया। 21 : पंजगाना नमाज़ों से या कुरआन शरीफ़ से 22 : कि दुन्या में मशगूल हो कर दीन को फ़रामोश

कर दे और माल की महबूबत में अपने हाल की परवा न करे और औलाद की खुशी के लिये राहते आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे 23 : कि उन्हों

ने दुन्याए फ़ानी के पीछे दारे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ने'मतों की परवा न की। 24 : या'नी जो सद्क़ात वाज़िब हैं वोह अदा करो।

25 : जो लौहे महफूज़ में मक्तूब है। 1 : सूरए तगाबुन अक्सर के नज़दीक मदनिय्या है और बा'ज़ मुफ़स्सरीन का क़ौल है कि मक्किय्या है

सिवाए तीन 3 आयतों के जो "يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِّ مِنْ أَوْلَائِكُمْ" से शुरूअ होती हैं, इस सूत में दो 2 रूकूअ, अठारह 18 आयतें, दो सो

इक्तालीस 241 कलिमे, एक हज़ार सत्तर 1070 हर्फ़ हैं। 2 : अपने मुल्क में मुतसरिफ़ है जो चाहता है जैसा चाहता है करता है, न कोई शरीक

न साझी, सब ने'मतें उसी की हैं।

مُؤْمِنٌ^١ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ^٢ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

कोई मुसलमान³ और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है उस ने आस्मान और ज़मीन हक़

بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ^٣ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ^٤ يَعْلَمُ مَا فِي

के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई⁴ और उसी की तरफ़ फिरना है⁵ जानता है जो कुछ

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ^٥ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

आस्मानों और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो और **अल्लाह** दिलों

بِذَاتِ الصُّدُورِ^٦ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا

की जानता है क्या तुम्हें⁶ उन की ख़बर न आई जिन्होंने ने तुम से पहले कुफ़्र किया⁷ और अपने

وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^٧ ذُكِرَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ

काम का ववाल चखा⁸ और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है⁹ यह इस लिये कि उन के पास

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشْرٍ يَلِدُونا فَكَفَرُوا وَأَتَوْا مَا سْتَعْنَى

उन के रसूल रोशन दलीलें लाते¹⁰ तो बोले क्या आदमी हमें राह बताएंगे¹¹ तो काफ़िर हुए¹² और फिर गए¹³ और **अल्लाह** ने बे नियाजी को

اللَّهُ^{١٠} وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ^{١١} زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا

काम फ़रमाया और **अल्लाह** बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा काफ़िरों ने बका कि वोह हरगिज़ न उठाए जाएंगे

قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ^{١٢} وَذُكِرَ عَلَيْكَ اللَّهُ

तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे कौतक (आ'माल) तुम्हें जता दिये जाएंगे और यह **अल्लाह** को

يَسِيرٌ^{١٣} فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا

आसान है तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल और उस नूर पर¹⁴ जो हम ने उतारा और **अल्लाह** तुम्हारे कामों

تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ^{١٤} يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَبْعِ ذُكِرَ يَوْمَ التَّغَابُنِ^{١٥}

से ख़बरदार है जिस दिन तुम्हें इकट्ठा करेगा सब जम्अ होने के दिन¹⁵ वोह दिन है हार वालों की हार ख़ुलने का¹⁶

3 : हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआदत व शक़ावत फिरिश्ता ब हुक्मे इलाही उसी वक़्त लिख देता है जब कि वोह अपनी मां के पेट में होता है । 4 : तो लाज़िम है कि तुम अपनी सीरत भी अच्छी रखो । 5 : आख़िरत में । 6 : ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! 7 : या'नी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के अहवाल मा'लूम नहीं जिन्होंने ने अम्बिया की तक़ीब की 8 : दुनिया में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई 9 : आख़िरत में 10 : मो'जिज़े दिखाते । 11 : या'नी उन्होंने ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और यह कमाले बे अक्ली व ना फ़हमी है, फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पथर का खुदा होना तस्लीम कर लिया । 12 : रसूलों का इन्कार कर के 13 : ईमान से । 14 : नूर से मुराद कुरआन शरीफ़ है

وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ

और जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और अच्छे काम करे **अल्लाह** उस की बुराइयां उतार देगा और उसे बागों में

جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ

ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें कि वोह हमेशा उन में रहें येही बड़ी

الْعَظِيمِ ۙ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ

काम्याबी है और जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतें झुटलाई वोह आग वाले हैं

خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۙ ۝ مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ

हमेशा उस में रहें और क्या ही बुरा अन्जाम कोई मुसीबत नहीं पहुंचती¹⁷ मगर **अल्लाह** के

اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

हुकम से और जो **अल्लाह** पर ईमान लाए¹⁸ **अल्लाह** उस के दिल को हिदायत फ़रमा देगा¹⁹ और **अल्लाह** सब कुछ जानता है और

أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا

अल्लाह का हुकम मानो और रसूल का हुकम मानो फिर अगर तुम मुंह फेरो²⁰ तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ

الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ ۙ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

सरीह पहुंचा देना है²¹ **अल्लाह** है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और **अल्लाह** ही पर ईमान वाले भरोसा करें

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِّ مِنْ أَرْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ

ऐ ईमान वाले तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं²²

فَاخْذِرُوهُمْ ۚ وَإِن تَعَفَوْا وَتَصَفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

तो उन से एहतियात रखो²³ और अगर मुआफ़ करो और दर गुज़र करो और बख़्शा दो तो बेशक **अल्लाह** बख़्शाने वाला

क्यूं कि इस की बदौलत गुमराही की तारीकियां दूर होती हैं और हर शै की हकीकत वाजेह होती है । 15 : या'नी रोजे क्रियामत जिस में सब

अव्वलीन व आख़िरीन जम्अ होंगे । 16 : या'नी काफ़िरों की महरूमि जाहिर होने का । 17 : मौत की या मरज की या नुकसाने माल की या

और कोई 18 : और जाने कि जो कुछ होता है **अल्लाह** तआला की मशिय्यत और उस के इरादे से होता है और वक़्ते मुसीबत

“إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ” पढ़े और **अल्लाह** तआला की अज़ा पर शुक्र और बला पर सब्र करे 19 : कि वोह और ज़ियादा नेकियां और

ताअतों में मशगूल हो । 20 : **अल्लाह** तआला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की फ़रमां बरदारी से 21 : चुनान्चे उन्हीं ने अपना फ़र्ज

अदा कर दिया और कामिल तौर पर दीन की तब्लीग़ फ़रमा दी । 22 : कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं 23 : और उन के कहने में आ कर नेकी से

बाज़ न रहे । शाने नुज़ूल : चन्द मुसल्मानों ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उन की बीबी और बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम

तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे तुम चले जाओगे हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जाएंगे, येह बात उन पर असर कर गई और वोह उठर गए,

कुछ अर्से के बा'द जब उन्हीं ने हिजरत की तो उन्हीं ने अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को देखा कि वोह दीन में बड़े माहिर और

رَّحِيمٌ ﴿١٣﴾ إِنبَاءَ أَمْوَالِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ فَتَنَّهُ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ

मेहरबान है तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं²⁴ और **अल्लाह** के पास बड़ा

عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْعَوْا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا

सवाब है²⁵ तो **अल्लाह** से डरो जहां तक हो सके²⁶ और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो²⁷ और **अल्लाह** की राह में खर्च करो

خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقْ شَحْنَفِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْبٰفِلِحُونَ ﴿١٦﴾

अपने भले को और जो अपनी जान की लालच से बचाया गया²⁸ तो वोही फ़लाह पाने वाले हैं

إِنْ تَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ

अगर तुम **अल्लाह** को अच्छा कर्ज़ दोगे²⁹ वोह तुम्हारे लिये उस के दूने कर देगा और तुम्हें बख़्शा देगा और **अल्लाह**

شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

कद्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है हर निहां और इयां का जानने वाला इज्जत वाला हिकमत वाला

﴿١٢﴾ ﴿٢٥ سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ ٩٩﴾ ﴿٢﴾ ﴿٢﴾ ﴿٢﴾ ﴿٢﴾

सूरए तलाक़ मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا

ऐ नबी² जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उन की इहत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इहत

الْعَدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تَخْرُجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

का शुमार रखो³ और अपने रब **अल्लाह** से डरो इहत में उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वोह आप निकलें⁴

फ़कीह हो गए हैं, येह देख कर उन्होंने ने अपनी बीबी बच्चों को सज़ा देने का इरादा किया और येह क़स्द किया कि उन का खर्च बन्द कर

दें क्यूं कि वोही लोग उन्हें हिजरत से मानेअ हुए थे जिस का येह नतीजा हुवा कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले अस्हाब इल्म व फ़िक्ह

में उन से मन्ज़िलों आगे निकल गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें अपने बीबी बच्चों से दर गुज़र करने और मुआफ़

करने की तरगीब फ़रमाई गई, चुनान्चे आगे इशाद फ़रमाया जाता है : 24 : कि कभी आदमी इन की वजह से गुनाह और मा'सियत में

मुब्तला हो जाता है और इन में मशगूल हो कर उमूरे आख़िरत के सर अन्जाम से गाफ़िल हो जाता है । 25 : तो लिहाज़ रखो ऐसा न

हो कि अम्वाल व औलाद में मशगूल हो कर सवाबे अज़ीम खो बैठो । 26 : या'नी ब क़द्रे अपनी वुस्अत व ताक़त के ताअत व इबादत

बजा लाओ येह तफ़सीर है "اتَّقُوا اللَّهَ حَتَّى تَقَاتِبَهُ" की 27 : **अल्लाह** तआला और उस के रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का 28 : और उस ने अपने

माल को इत्मीनान के साथ हुक्मे शरीअत के मुताबिक़ खर्च किया 29 : या'नी खुशदिली से नेक निय्यती के साथ माले हलाल से सदका

दोगे, सदका देने को बराहे लुत्फ़ों करम कर्ज़ से ता'बीर फ़रमाया, इस में सदक़े की तरगीब है कि सदका देने वाला नुक़सान में नहीं है बिल

यकीन इस की जज़ा पाएगा । 1 : सूरए तलाक़ मदनिय्या है, इस में दो 2 रकूअ, बारह 12 आयतें और दो सो उन्चास 249 कलिमे और